च्याङ चिलुङ

(१९४१ -   )

च्याङ चिलुङ का जन्म १९४१ में हपेइ प्रांत की छाङश्येन काउंटी के एक गांव में हुआ था। १९५८ में उन्होंने थ्येनचिन भारीमशीन कारखाने में मजदूर की नौकरी की। १९६० में वह सेना में शामिल हो गए। १९६५ की गर्मियों में वह पुनः कारखाने लौटे और उत्पादक दल के नेता, कारखाना निदेशक के क्लर्क, वर्कशाप में पार्टी शाखा के उपसचिव और वर्कशाप के उपनिदेशक आदि विभिन्न पदों पर उन्होंने कार्य किया।

च्याङ चिलुङ ने १९६२ से लिखना आरंभ किया। १९७६ में प्रकाशित "मशीनरी और बिजली ब्यूरो के प्रधान के जीवन का एक दिन" कहानी ने तीव्र सामाजिक प्रतिक्रिया उत्पन्न की। १९७९ में प्रकाशित "मैनेजर छ्याओ ने कार्यभार संभाला" कहानी ने उस वर्ष राष्ट्रीय कहानी प्रतियोगिता में प्रथम श्रेणी का पुरस्कार प्राप्त किया। उसी वर्ष उन्होंने चीनी लेखक संघ की सदस्यता ली। १९८० में प्रकाशित उपन्यासिका "पथप्रदर्शक" को राष्ट्रीय उपन्यासिका प्रतियोगिता (१९७७-८०) में द्वितीय पुरस्कार मिला।

फैक्ट्री क्लर्क की डायरी

च्याङ चिलुङ

४ मार्च, १९७९

आज मैं समय से एक घंटे पहले कारखाने गया, क्योंकि निदेशक वाङ जाने वाले थे। मेरा अनुमान था कि उनके जैसा आदमी जाने के पहले सभी के आ जाने की प्रतीक्षा नहीं करेगा। निश्चित था कि कारखाने का काम आरंभ होने से पहले वह कारखाना छोड़ देना चाहेंगे।

निदेशक वाङ ने स्वयं कंपनी के पास आवेदन देकर अपना स्थानान्तरण करवाया था। मैं अच्छी तरह समझ सकता हूं, उन्होंने यही सोचा होगा कि यदि वह यहां रुके रहे तो कारखाने में अपना समय बर्बाद करेंगे। निस्संदेह उपनिदेशक ल्वो ने इसके लिए विवश किया था। संभवतः कारखाने का हर आदमी इस बात से वाकिफ था, पर किसी में इतनी हिम्मत नहीं थी कि शीशाविहीन खिड़की से चिपके कागज को फाड़ दे, जिससे सत्य की हवा आ सके। खासकर निदेशक वाङ के सामने तो यह करने का साहस किसी में नहीं था। यह एक मौन समझदारी थी, जिसने आसपास के लोगों के लिए कभी चीजों को असहनीय नहीं होने दिया।

पिछले चार वर्षों से मैं यहां क्लर्क हूं। मेरे सामने दो निदेशक जा चुके हैं। निदेशक वाङ तीसरे हैं। उन्होंने बड़े उत्साह और जोश के साथ कार्यभार संभाला था, पर अब निराश हो अपने उत्तराधिकारी को रास्ता दे जा रहे थे। जो अधिकार की खोज में रहते हैं, वे प्रभाव और सत्ता का इस्तेमाल करते हैं; पर सत्ता भी उस व्यक्ति का इस्तेमाल कर बदला लेती है। स्थानान्तरण, पुनर्चुनाव और नेताओं की अदला-बदली संभवतः समस्याओं को सुलझाने का आसान तरीका है। यह पहले भी होता था, अब भी होता है। देश-विदेश सब जगह यही हाल है। हर बार एक निदेशक के स्थानान्तरण के साथ एक आत्मा नंगी होती हैं। मुझे शांत होने में समय लगेगा। मैंने क्लर्क की हैसियत से पहली बार अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया और निदेशक वाङ को नयी जगह पहुंचाने के लिए कारखाने की जीप की व्यवस्था की।

मेरे पहुंचने पर रिसेप्शन पर बैठे व्यक्ति ने कहा, "निदेशक वाङ आधे घंटे पहले चले गए।"

"अकेले?"

"पार्टी सचिव ल्यू उनका सामान ले गए हैं।"

"और कारखाने की जीप?"

"कल रात उपनिदेशक ल्वो ने जीप कहीं भेज दी थी।"

मेरे दिल में हूक उठी। मैंने निदेशक वाङ की मदद के लिए एक घंटा पहले आना तय

किया, पर उन्हें अपमानित करने पर तुला व्यक्ति एक दिन पहले ही दांव चल गया। मेरे अंदर क्रोध की एक लहर उठी, मुझे पार्टी सचिव ल्यू पर बड़ा तेज गुस्सा आया। ऐसी ईमानदारी किस काम की, निष्प्रभावी व्यक्ति! आपके शानतुङ प्रांत ने प्राचीन काल से ही कितने बड़े व्यक्ति और वीर पैदा किए, पर आपमें उनका एक अंश भी क्यों न आया। वरिष्ठ अधिकारी ने न केवल निदेशक को बाहर भेजा, बल्कि वह उनका सामान भी ढोकर ले गए और उन्हें भीड़ भरी बस में चढ़ा दिया।

मैं इन्हीं विचारों में खोया कारखाने के गेट पर खड़ा था, तभी जीप आकर गेट पर रुकी। उपनिदेशक ल्वो जीप से उतरे, उनके पीले चेचकरू चेहरे पर आत्मसंतोष की मुस्कान थी। मुझे देखकर हंसते हुए बोले, "लाओ वेइ, क्या बात है? आज बड़े सबेरे आ गए? अच्छा, निदेशक वाङ से मिलने आए थे? वह चले गए क्या?"

"हां, चले गए।" खराब मूड में रहने के कारण मैंने विशेष कुछ नहीं कहा। दूसरे ऐसी-वैसी कोई बात कहकर अनावश्यक मुसीबत मोल नहीं लेना चाहता था। आखिर एक क्लर्क की हैसियत ही क्या होती है?

उपनिदेशक ल्वो ने अपनी जेब से दोहरी आवाज वाले पटाखे निकाले। मेरी तरफ बढ़ाते हुए उन्होंने कहा, "ये दो तुम ले लो।"

मैंने नहीं लिये और कहा, "मैं इन्हें छोड़ने का साहस नहीं कर सकता।"

उन्होंने दबी हंसी के साथ कहा, " ओह, ऐसा कहो न कि अब पटाखे छोड़ने की उम्र नहीं रही!"

"क्या आप हमेशा जेब में पटाखे लेकर चलते हैं?" मैंने पूछा।

उन्होंने बताया, "वसंत त्योहार के बच गए थे। दुर्भाग्य को भगाने के लिए छोड़ रहा हूं।"

...ब...बम्म!

"ही... ही... ही...ही!"

ठंडी हवा के झोंके की तरह वह आवाज कानों में घुसी और हड्डी तक को कंपा गई। अच्छा हुआ कि निदेशक वाङ पहले चले गए, दोहरी आवाज के पटाखे की आवाज सुनकर उनके दिल पर क्या गुजरती?

कारखाना निदेशक! कौन सोच सकता था कि इस पद के लिए कोई इतना पतित व्यवहार कर सकता है। इस पद को पाने और अपने पद के आगे से 'उप' उपसर्ग हटाने के लिए ल्वो पहले ही तीन निदेशकों को भगा चुके थे। पर कंपनी ने दो बार नए निदेशक को नियुक्त कर दिया। क्या निदेशक वाङ के बदले फिर से कोई निदेशक आएगा या फिर उपनिदेशक की उम्मीद के अनुसार उनके पद के आगे से 'उप' जैसा भारी उपसर्ग हट जाएगा? यदि ऐसा हुआ तो मुझे भी इस कार्यालय को छोड़ने के बारे में सोचना होगा और उत्पादन विभाग में सांख्यिकीविद् की पुरानी नौकरी पर लौट जाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

११ मार्च, १९७९

"लाओ वेइ, क्या यह सच है कि उपनिदेशिक ल्वो को निदेशक बना दिया गया है?" अनेक मजदूर मुझसे यह सवाल पूछ रहे थे।

मैंने बार-बार यही जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम।" इस जवाब को सुनने पर मजदूरों ने आश्चर्य प्रकट किया, "रहने भी दें। भला आपको मालूम नहीं होगा?"

मेरे दयनीय देशवासियो... तुम्हें कोई अधिकार नहीं है, पर तुम इतने जिज्ञासु हो। तुम सब बस किसी विषय पर गप्प लड़ाना चाहते हो। कोई भी निदेशक हो, तुम्हें तो अपना काम करना है। किसी की भी नियुक्ति हो, इससे तुम्हें क्या? पिछले कुछ दिनों से उपनिदेशक ल्वो को सभी निदेशक कहने लगे हैं। कुछ वर्कशाप अपनी रिपोर्ट अब उपनिदेशक ल्वो के बजाए निदेशक ल्वो के नाम भेजती हैं। मजदूरों से भी दयनीय स्थिति उन कार्यकर्ताओं की है, जो हवा के रुख के अनुसार पीठ कर लेते हैं।

"लाओ वेइ, आपने देखा? आखिर उपनिदेशक ल्वो ने निदेशक का पद संभाल ही लिया। सुबह से रात तक वह पूरे कारखाने में घूमते और निरीक्षण करते हैं। बात करते समय उनकी आवाज का स्वर भी ऊंचा हो गया है और चेहरे का हाव-भाव भी पहले से अच्छा लगता है।"

"हां, मैंने देखा है।" क्या सचमुच लोग इस बात को बहुत अधिक महत्व नहीं दे रहे हैं? आपको मालूम होना चाहिए कि आप कारखाने में दूसरों का चेहरा देखने नहीं, अपना काम करने आए हैं! शायद क्लर्क होने के कारण मैं इतना बेसुध या फिर तटस्थ हूं। मैं सबकी बातें सुनता हूं और सभी के चेहरों के भाव देखता हूं। पर बिना सुने मैं उनकी बातें सुन लेता हूं, बगैर कोशिश के उनके चेहरे के भाव देख लेता हूं, हमेशा इन सबसे दूर ही रहने की कोशिश करता हूं।

कितने दुख की बात है! किसी दिन यदि मैं स्वयं कारखाना निदेशक बना, मैं किसी को भी इस तरह परेशान नहीं रहने दूंगा। मैं अपने लिए रोबोट को क्लर्क के तौर पर रख लूंगा, जिसके हृदय नहीं होता, जो सांस नहीं लेता, जिसके मुंह-कान नहीं होते और स्टील के बने चेहरे पर कोई भाव नहीं होता। संक्षेप में, जो प्रकृति के हिसाब से बदलेगा, न कि राजनीतिक मौसम से।

मैं जानता हूं, इन दिनों मेरे भाव और मेरी आवाज के टोन पर कोई निगरानी रख रहा है। मैं अभी भी ल्वो मिङ का उल्लेख उनके पूरे पद के साथ करता हूं, "उपनिदेशक ल्वो"। जिन दस्तावेजों को निदेशक के पास भेजना चाहिए, उन्हें मैं नियम के अनुसार निदेशक की अनुपस्थिति में पार्टी सचिव ल्यू के पास ले जाता हूं। फिर उनकी सलाह के अनुसार दूसरों तक पहुंचाता हूं। मैं उन्हें सीधे ल्वो मिङ के पास नहीं ले जाता या अपनी सलाह नहीं देता, क्योंकि मुझे अपनी औकात मालूम है। ल्वो ने भी इसे महसूस किया है, पर वह कुछ भी नहीं कर सकते। मुझे अभी तक अधिकारियों से उनकी नियुक्ति की सूचना नहीं मिली है।

ल्वो मिङ के निदेशक बनने पर मुझे कोई आपत्ति नहीं है, क्योंकि यह मेरे अधिकार से बाहर है। पर अधिकारी मेरी राय पर विचार करें तो मैं यही कहूंगा, "यह सच है कि ल्वो मिङ काफी दिनों से इस कारखाने में हैं। यहां की सभी चीजों से परिचित हैं और उनका समर्थन करने वाले लोग भी हैं, पर वह कारखाने का निदेशक होने के योग्य नहीं हैं। उन्हें

केवल निदेशक के पद की चिंता है; इस पद की जिम्मेदारी से उनका कोई वास्ता नहीं है। वह अच्छे निदेशक होने की योग्यता नहीं रखते।"

१२ मार्च, १९७९

आज विचित्र बात हुई! आज उपनिदेशक ल्वो की बेटी ल्वो चिङय्वी मेरे दफ्तर आई और उसने आधे दिन तक मुझे व्यस्त रखा।

दो साल पूर्व वह देहात से शहर आने में सफल हुई। पर तब से उसे कोई काम नहीं मिला, क्योंकि उसका स्तर काफी ऊंचा था। वह किसी विशेष समूह की इकाई में काम नहीं करेगी। पसंद का काम न मिलने पर या घर से दूर दफ्तर होने पर वह इंकार कर देती है। वह बहुत कम ही दफ्तर आती थी, मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्यों मेरे सामने बैठी लगातार बातचीत किए जा रही है।

वह काफी देर तक इधर-उधर की बातें करती रही। अंत में जब उसके काम का प्रसंग आया, तब उसने तपाक से कहा, "मैं आपके कारखाने में काम करना पसंद करूंगी।"

मैंने अविश्वास प्रकट किया, "तुम मजाक तो नहीं कर रही हो? हमारा कारखाना बहुत छोटा है। हालांकि यह राज्य संचालित कारखाना है, पर यहां केवल २०० मजदूर काम करते हैं। तुम्हें यह जगह बहुत छोटी लगेगी। दूसरे, यह एक रासायनिक कारखाना है, यहां का काम तुम्हारी पसंद का भी नहीं होगा।"

उसने साफ-साफ कहा, "मैं दो वर्षों से अच्छी नौकरी की उम्मीद में बैठी हूं। इस साल मैं २६ की हो चुकी हूं। इस तरह बैठी अब ज्यादा प्रतीक्षा नहीं कर सकती। और फिर यह कारखाना अच्छा है, यहां लागत कम है और मुनाफा ज्यादा है इसलिए मजदूरों को काफी बोनस भी मिल जाता है।"

"जब ऐसा ही तुम्हारा इरादा है तो अपने पिता से इस मामले पर बात क्यों नहीं करतीं!"

"नहीं, यह अच्छा नहीं लगेगा। लाओ वेइ, आप ही मेरी ओर से पापा से बात कर लें!"

अपने व्यक्तिगत हित के लिए वरिष्ठ अधिकारी का कृपा-पात्र बनने के लिए यह अच्छा मौका था। जब कारखाना निदेशक कुछ हासिल करना चाहता है, पर स्वयं करने में उसे हिचक होती है तो उसके क्लर्क को यह जिम्मेदारी सौंप दी जाती है। जरूरत के अनुसार निदेशक की मदद के लिए उसे अपने सामर्थ्य के अनुसार सब कुछ करना चाहिए। पर चार वर्ष पहले पार्टी शाखा के आदेश के खिलाफ जाने के बजाय मैंने यहां आकर क्लर्क बनना स्वीकार किया था। यहां आने पर मैंने एक सौगंध खाई थी : चाहे किसी के लिए भी काम करूं, उससे सिर्फ कार्यालयी रिश्ता रखूंगा और किसी निजी काम के झमेले में नहीं पड़ूंगा। मैं कार्यालय के नियम के अनुसार कारखाने के काम की देखभाल करूंगा। किसके साथ काम कर रहा हूं, यह मेरे लिए महत्वपूर्ण नहीं होगा और सरकारी काम में अपनी व्यक्तिगत इच्छा को हस्तक्षेप नहीं करने दूंगा। इसलिए मैंने उसे जवाब दिया, "मैं पहले पार्टी शाखा से इस संबंध में पूछूंगा। फिर हम इस विषय पर बात कर सकते हैं।"

ल्वो चिङ्यूवी को मेरी बात अच्छी नहीं लगी। निस्संदेह उसने इस समय आने का फैसला इसलिए किया होगा कि उसके पापा के निदेशक बनने की पूरी संभावना है। आज के समाज के नए श्रेणी विभाजन के अनुसार निदेशक की बेटी का ओहदा क्लर्क से ऊंचा है, इसलिए क्लर्क को उसकी अच्छी सेवा करनी चाहिए। किसी भी सूरत में मैं निदेशक की बेटी का क्लर्क नहीं कहलाना चाहता। ल्वो चिङ्यूवी मेरी बात से बिलकुल खुश नहीं थी और अपने पिता की तरह झूठी मुस्कान फेंकते हुए उसने दरवाजा खोला और चली गई।

१५ मार्च, १९७९

सचिव ल्यू ने खुश होकर धीमे स्वर में मुझे बताया, "नए निदेशक जल्दी ही आने वाले हैं।" सचिव कभी-कभी बच्चों की तरह भोला व्यवहार करते हैं। इसके पहले तीन बार उन्होंने खुशी-खुशी नए निदेशकों का स्वागत किया और भारी दिल से उन्हें विदा किया। यहां तक कि उनका सामान भी ढोया। अब नए निदेशक के आने की बात सुनकर वह फिर से खुश हैं।

शायद मैं खुशी और निराशा दोनों से तटस्थ हूं।

१८ मार्च, १९७९

"ट्रिंग... ट्रिंग... ट्रिंग..."

बाहर से ही मुझे अपने कार्यालय में बजती टेलीफोन की घंटी सुनाई पड़ी। हम हमेशा उनका उपहास करते हैं जो समय से एक मिनट पहले काम पर नहीं आते। हम मजाक में उन्हें "घड़ी के साथ चलने वाला" कहते हैं। सच यह है कि दस दिनों में आठ दिन कार्यालय में मेरे पहुंचने के पहले से घंटी बजती रहती है। इस समय आने वाले अधिकांश फोन निदेशक के लिए होते हैं, क्योंकि पाली आरंभ होने के समय उन्हें पकड़ पाना आसान होता है। पाली आरंभ होने के आधे घंटे बाद भी उन्हें खोज पाना मुश्किल होता है। मुझे मालूम नहीं कि वे कहां गायब हो जाते हैं; यह भी नहीं मालूम कि वे कार्यालय के काम में व्यस्त रहते हैं या अपने काम में।

"ट्रिंग... ट्रिंग... ट्रिंग..."

क्लर्क की इच्छा न हो तो वह एकदम बहरा बन जाता है। चाहे लगातार घंटी बजती रहे, मैं हमेशा आम दिनों की ही तरह दरवाजा खोलता हूं और थैले से ब्रेड या खाने की कोई और चीज का एक टुकड़ा तोड़ने के बाद ही रिसीवर उठाता हूं।

"हेलो, हेलो, क्या लाओ वेइ हैं! मेरी एक मदद करें। कल मेरे पिता का देहांत हो गया, आज उन्हें अंतिम संस्कार के लिए ले जाना है। क्या आप निदेशक से कहकर कारखाने की कार की व्यवस्था करवा देंगे?"

"आप कौन हैं?" मैंने चौंककर पूछा।

"मैं फाङ हूं, फाङ वानछङ। माफ करें, आपको थोड़ी परेशानी होगी।"

मैंने अनिच्छा से कहा, "आपने पहले इस बारे में क्यों नहीं बताया?"

"मुझे भी मालूम नहीं था कि इतनी जल्दी वह चल बसेंगे।"

यह एक गंभीर समस्या थी। मैंने समझाते हुए कहा, "आप भी अच्छी तरह जानते हैं कि कारखाने में केवल एक जीप और एक कार है। दोनों गाड़ियां कच्ची सामग्री लाने के लिए बाहर गई हैं। एक-दो दिनों से पहले नहीं लौट पाएंगी। मैं कुछ भी करने में असमर्थ हूं।"

फाङ ईमानदार और मेहनती क्रेन आपरेटर हैं। यदि दूसरा कोई उपाय होता तो वह कभी मदद नहीं मांगते। वह जिद्दी भी हैं। मैंने सारी स्थिति उन्हें समझा दी, फिर भी वह अनुरोध करते रहे, "लाओ वेइ, मैं निदेशक ल्वो से बात नहीं कर सकता। लोग चाहे जो भी कहते रहें, पर आप पिछले कुछ वर्षों से निदेशक के क्लर्क हैं और आपकी पहुंच मुझसे अधिक है। आप ही का भरोसा है। अंतिम संस्कार का समय तय कर पाना आसान नहीं होता। मेरे संबंधी आ रहे हैं और यदि हमें कार नहीं मिली तो हम श्मशान घाट नहीं जा सकेंगे। मैं क्या करूं? लाओ वेइ, मैं आपका भरोसा कर रहा हूं। कृपया कोशिश करें।"

अब यह मेरे ऊपर था कि फाङ के पिता का अंतिम संस्कार हो जाए; पर मेरी समझ में नहीं आया कि मैं कार की व्यवस्था कहां से करूं। मजदूरों की नजर में क्लर्क की हैसियत बड़ी होती है। उन्हें यह नहीं मालूम कि देखा जाय तो मैं निदेशक के नौकर से अधिक कुछ नहीं हूं, उनके लिए दौड़धूप करके उनके आदेशों को तोते की तरह दुहरा दिया करता हूं। पर ऐसे समय पर सत्य के तर्क से फाङ को नहीं समझाया जा सकता था। फिलहाल उनकी जान-पहचान में मैं ही बड़ी हैसियत का था। उनके पास भी दूसरा कोई उपाय न था।

मैं रिसीवर थामे परेशान मुद्रा में बैठा था कि एक गोल-मटोल व्यक्ति मेरे पीछे से सामने आया (मुझे नहीं मालूम वह कब अंदर आया था)। उसने हंसते हुए मुझसे कहा, "मुझे बात करने दें।" मैं चिढ़ा हुआ था, मैंने बेमन से पूछा, "हां, क्या बात है?"

गोल-मटोल नाटे व्यक्ति के फूले केक जैसे चेहरे पर उभरी चमकीली सोनमछली जैसी आंखें थीं। वह व्यक्ति अत्यंत प्रसन्नचित्त लगा। उसकी मुस्कराहट से ऐसा लग रहा था जैसे किसी पुराने परिचित से मिल रहा हो। मैंने अनुमान लगाया कि वह आपूर्ति और विपणन विभाग का प्रभारी होगा और किसी काम के सिलसिले में कारखाने आया होगा। मैंने हाथ से बायीं तरफ इशारा किया, "उत्पादन विभाग बायीं तरफ तीसरे दरवाजे में है।"

नाटे व्यक्ति ने सिर हिलाकर कहा, "मेरा नाम चिन फ़ङछि है। मुझे रसायन ब्यूरो से पूर्वी रासायनिक कारखाने का काम सौंपा गया है।"

तो वह नए निदेशक थे! मैं सकते में आ गया। मैंने स्वयं को गाली दी कि मैं लोगों की वेशभूषा से उनका अनुमान लगाने लगा हूं। कम से कम क्लर्क को तो दंभ से दूर रहना चाहिए।

मैंने चिन फ़ङछि को रिसीवर दिया। उन्होंने रिसीवर लेकर गंभीर मगर सांत्वना देने के स्वर में कहा, "चिंता न करें, कॉमरेड फाङ। आपको कार कितने बजे चाहिए?" उन्होंने अपनी जेब से बॉल पेन निकाला, मैंने उन्हें कागज दिया। लिखते हुए वह फाङ की बात दुहरा रहे थे।

"आपको दस बजे कार चाहिए, ठीक है। आपका पता क्या है? चिनचओ रोड, सेक्शन-५, नंबर-८, ठीक है। आपका पूरा नाम क्या हुआ? फाङ वानछङ। अच्छा! आप दस बजे कार का इंतजार करें। कार समय पर वहां पहुंच जाएगी। तकल्लुफ मत कीजिए और किसी से

इसकी चर्चा न कीजिए। और कोई बात हो तो बताएं! मैं कौन हूं, इससे फर्क नहीं पड़ता। मैं आपके काम आ सकूं, यही काफी है। हां, एक बात और। बूढ़े व्यक्ति की मृत्यु से अधिक दुखी नहीं होना चाहिए। आप परेशान न हों। आप अपना ख्याल रखें और कुछ दिन आराम करें...''

चिन फ़ङछि ने बाएं हाथ से रिसीवर उठाकर फिर दूसरा नंबर घुमाया, ''रासायनिक मशीनरी मरम्मत केंद्र? आप कौन हैं? लाओ तू? मैं कौन बोल रहा हूं? हा! हा! हां, नए पद पर अभी-अभी आया हूं। मुझे आना ही था, दूसरा कोई उपाय नहीं था। तुम सबों को और कारखाने को मैं छोड़ना नहीं चाहता था। भई, एक जरूरत आ पड़ी है, मुझे अपनी गाड़ी की जरूरत है। क्या मिल सकेगी? मिल जाएगी? बहुत अच्छा। ड्राइवर श्याओ सुन से कह दें कि उसे चिनचओ रोड, सेक्शन-५, नंबर-८ पते पर दस बजे पहुंचना है। वहां फाङ वानछङ नामक व्यक्ति मिलेगा। धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद, मेरी किसी मदद की जरूरत हो तो एक फोन कर देना।''

रिसीवर रखने के बाद उन्होंने पलटकर मुझसे पूछा, ''यहां हमारे पास कितने टेलीफोन हैं?''

मैंने कहा, ''यह एक छोटा कारखाना है। यहां केवल तीन टेलीफोन हैं। एक तो यह है, एक उत्पादन विभाग में है और एक रिसेप्शन पर।''

वह कुर्सी खींचकर बैठ गए और अपनी जेब से सिगरेट का पैकेट निकालकर मेरी तरफ बढ़ाया। उन्होंने अपनी सिगरेट जलाई। उन्होंने मुझे थोड़ी देर तक देखा, उनकी उभरी आंखें हंसी से चमक रही थीं। उन्होंने कहा, ''शायद पूछने की जरूरत नहीं है? आप अवश्य ही कॉमरेड वेइ हैं, यहां की सारी चीजों के प्रभारी क्लर्क, हैं न!''

मैंने धीमे स्वर में कहा, ''मेरा नाम वेइ चिश्याङ है। मुझे मेरी योग्यता से बड़ा काम सौंप दिया गया है। आपको इसी परिस्थिति में काम चलाना होगा।'' मेरे स्वर से स्पष्ट था कि क्लर्क होने की मुझे कोई खुशी नहीं है।

निदेशक चिन ने नम्र स्वर में कहा, ''मैं अभी-अभी आया हूं और यहां के माहौल से परिचित नहीं हूं। मुझे हमेशा आपकी मदद की जरूरत पड़ेगी।''

मैंने हाथ झटक कर कहा, ''मैं इस दिशा में नहीं सोच रहा था।''

निदेशक चिन मेरे जवाब से अप्रसन्न दिखे। उन्होंने गंभीरता से अपनी बात पर जोर देकर कहा, ''ईमानदारी की बात यह है कि जनता कार्यकर्ताओं को सिखाती है और क्लर्क निदेशक के प्रशिक्षक होते हैं। जब भी कोई सभा होती है या कोई रिपोर्ट भेजनी होती है तो निदेशक अपने क्लर्क पर निर्भर करता है। यदि क्लर्क प्रतिभाशाली हो तो निदेशक सक्षम लगता है, यदि क्लर्क अच्छा न हो तो निदेशक से कोई उम्मीद नहीं होती। सारे सरकारी दस्तावेज पहले आपके हाथ में आते हैं, फिर उन्हें विभिन्न प्रभारी मैनेजरों को देने का काम आपका होता है। सचमुच, आप निदेशक के निरीक्षक हैं। निदेशक मजदूरों को संभालता है तो क्लर्क निदेशक को संभालता है।''

उनकी बात सुनकर मैं स्थिर नहीं रह सका। पहले तो मुझे आशा बंधी, पर न जाने क्यों बाद में परेशानी-सी महसूस हुई और मेरा चेहरा लाल हो गया। मैं निश्चित नहीं कर पा रहा

था कि वह मेरी खुशामद कर रहे हैं या मुझ पर व्यंग्य कस रहे हैं। कारखाने में मेरी हैसियत बस इतनी है कि जिस काम का मुझे प्रशिक्षण नहीं मिला, मैं वह काम कर रहा हूं। मैं नए निदेशक की बात से हक्का-बक्का रह गया। अभी भी मैं नहीं कह सकता कि उनके बारे में मेरे क्या विचार हैं? बस इतना लगा कि काम करने वाले व्यक्ति हैं।

दोपहर में पिता का अंतिम संस्कार कर बिना कपड़े बदले फाङ वानछङ सीधे कारखाने आए और नए निदेशक से मिलना चाहा। निदेशक चिन सचिव ल्यू के साथ वर्कशाप में काम की स्थिति देखने गए थे। जब मजदूरों ने मुझे फाङ के साथ निदेशक की खोज में जाते देखा तो जिज्ञासा में उन्होंने हमें घेर लिया।

निदेशक को देखते ही फाङ पुरानी थ्येनचिन शैली में उनके कदमों पर लेट गया, वह फर्श पर अपना सिर पटककर उन्हें प्रणाम करने लगा। यह चौंकाने वाली बात थी कि परिवार के एक बूढ़े की मृत्यु के बाद यह पुरानी प्रथा हमारे कारखाने में भी आ गई थी। मैंने फाङ से इसकी कल्पना भी नहीं की थी। निदेशक चिन भी नहीं समझ पाए। घबराहट में उन्होंने खड़े होने में उनकी मदद की, "कॉमरेड फाङ! यह आप क्या कर रहे हैं?"

फाङ कृतज्ञता से अभिभूत थे। पर निदेशक की भावुकता देखकर वह हकलाते हुए इतना ही बोल पाए, "निदेशक चिन, आपको धन्यवाद! यदि आपने मेरे घर गाड़ी नहीं भेजी होती तो मेरे पिता की लाश न जाने कितने दिनों तक पड़ी रहती। अब तक तो लाश से बदबू भी आने लगी होती। मेरे स्वर्गीय पिता अवश्य ही आपको धन्यवाद दे रहे होंगे! धन्यवाद..."

निदेशक चिन ने फाङ का कंधा थपथपाकर सांत्वना देनी चाही, पर नाटे निदेशक का हाथ संभवतः लंबे मजदूर के कंधे तक नहीं पहुंच पाता, इसलिए फाङ का हाथ थामकर उन्होंने गंभीरता से कहा, "बहुत हुआ। आजकल जिसके पास संपर्क है, वह उसका फायदा उठाता है और जिसके पास पद है, वह उसका इस्तेमाल करता है। पर उन मजदूरों का क्या होगा, जिनका कोई संपर्क या प्रभाव नहीं है? शायद यही कारण है कि एक तो मजदूरों और नेताओं के बीच विरोध बना हुआ है और दूसरे, मजदूर १९५८ के पहले की तरह काम नहीं कर रहे हैं। हम शिकायत करते हैं कि वे आत्मकेंद्रित हो गए हैं और केवल अपने हितों के बारे में सोचते हैं, पर मुझे लगता है कि जब उनके सामने कोई मुसीबत आती है तो कोई उनकी परवाह नहीं करता। ऐसे में यदि वे अपनी देखभाल नहीं करेंगे तो कौन करेगा?"

निदेशक चिन की साफगोई से मुझे आश्चर्य हुआ। वह अभी-अभी आए थे और अपने पुराने दोस्तों की तरह मजदूरों से साफ-साफ बात कर रहे थे। उनकी बातचीत में मजदूरों का गुस्सा भी प्रकट हो रहा था।

निस्संदेह, निदेशक की ये बातें मजदूरों के दिल में एकदम जा बैठीं। मजदूरों की प्रशंसाभरी नजरों व फुसफुसाहट से मैं यह कह सकता था कि निदेशक चिन ने अपनी स्पष्टवादिता से मजदूरों पर किसी बड़ी सभा में औपचारिक रूप से "शपथ-ग्रहण" करने वाली भाषा की अपेक्षा कहीं अधिक प्रभाव डाला था।

मजदूरों ने गर्मजोशी से नए निदेशक का स्वागत किया, यह देखकर सचिव बेहद खुश

थे। उन्होंने निदेशक से कहा, "आप स्वयं देखें, यहां के मजदूर कितने अच्छे हैं। वे सब आपका स्वागत कर रहे हैं।"

निदेशक चिन बढ़कर फाङ के पास गए और सुबह फोन पर उनसे कही बात को फिर से दोहराया, "वानछङ, कोई भी मरने के बाद नहीं लौटता। आप भी परेशान न हों। कुछ दिन आराम करें और अंतिम संस्कार के सारे कार्य निपटाएं। अपना ख्याल अवश्य रखें।"

फाङ वानछङ ने शरमाते हुए कहा, "नहीं!" वह इतना प्रभावित थे कि अपनी बात नहीं कह पा रहे थे। "मैं आराम करना नहीं चाहता। मैं यहां काम करने आया हूँ।" इतना कहकर वह कपड़े बदलने चले गए। निदेशक चिन के कहने पर भी उन्होंने आराम नहीं किया और जरूरत से ज्यादा समय नहीं लिया। परिवार के सदस्य की मृत्यु पर मिलने वाली तीन दिनों की छुट्टी में उन्होंने केवल डेढ़ दिनों की छुट्टी ली।

सचिव ल्यू निदेशक चिन को दूसरी वर्कशॉप में ले गए। मैं अपने कार्यालय की तरफ जाने के लिए मुड़ा, तभी भीड़ के पीछे खड़े उपनिदेशक ल्वो पर मेरी नजर पड़ी। वह सिगरेट पीते हुए ल्यू और चिन को जाते देख रहे थे। उनके चेहरे के सारे दाग साफ-साफ दिखाई दे रहे थे। उनके चेहरे के दाग उनके मूड के बैरोमीटर हैं। जब वह खुश होते हैं तो दाग दिखाई नहीं पड़ते, पर जब चिढ़े या नाराज होते हैं तो चेहरे के लाल होने पर सारे दाग सफेद हो जाते हैं।

वह फाङ के पास गए और हंसते हुए बोले, "फाङ वानछङ, मैं सोच भी नहीं सकता था कि तुम्हारे जैसे मजबूत आदमी की टांगें इतनी कमजोर होंगी। किसी ने तुम्हें कार दिलवा दी और तुम घुटनों के बल बैठ गए।"

फाङ वानछङ ने हकलाते हुए पूछा, "उपनिदेशक ल्वो, आप क्या ...?"

ल्वो का स्वभाव कुत्ते जैसा है। वह बिना किसी चेतावनी के भौंकने लगते हैं और बिना किसी कारण के काट खाते हैं। मैंने उन्हें न देखने का बहाना किया और सिर झुकाए अपने कार्यालय की तरफ बढ़ा। फिर भी, वह पीछे से दौड़े आए और मेरे साथ चलने लगे।

"लाओ वेइ, अपने नए बॉस सचमुच लोगों का दिल जीतना जानते हैं।"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। जब निदेशक सींग भिड़ाते हैं, मैं बीच में नहीं पड़ता। मैं किसी के भी साथ नहीं रहता। फिर भी मैं अनुमान कर सकता हूं कि अपना छोटा रासायनिक कारखाना शीघ्र ही झगड़े का अड्डा बनने वाला है।

२३ मार्च, १९७९

"निदेशक चिन ने काम संभालने के साथ एक जरूरतमंद मजदूर को दूसरी इकाई से कार मंगवा कर दी।" यह समाचार कारखाने में तेजी से फैल गया। हर बार दूसरे को कहने के साथ इसमें कुछ जुड़ता गया। यहां के लोग आसानी से संतुष्ट होते हैं और आसानी से भड़क जाते हैं।

२ अप्रैल, १९७९

आज मैं निदेशक चिन के साथ कंपनी रिपोर्ट पेश करने गया। जीप में बैठे हम दोनों में काफी देर तक कोई बात नहीं हुई। अचानक उन्होंने मुझसे एक अप्रत्याशित सवाल पूछा।

'' 'कुत्ता भी अपनी गली में शेर होता है', यह पंक्ति किस ऑपेरा की है?''

''शाच्यापाङ'' मैंने कहा।

हम दोनों फिर से चुप हो गए, पर मैंने इस सवाल का मतलब अच्छी तरह समझा।

जीप से उतरकर कंपनी के कार्यालय में जाते समय निदेशक चिन ने मुझसे कहा, ''हम अपनी रिपोर्ट सबसे पहले पेश करेंगे। मींटिग के आरंभ में हर आदमी भद्रता से पेश आता है। सभी बड़े अधिकारी काम निबटाने की जल्दी में नहीं रहते, आरंभ में वे दूसरों की बातें भी ध्यान से सुनते हैं। हमारे कारखाने जैसे छोटे कारखाने की रिपोर्ट अन्यथा बीच में दब जाएगी। मीटिंग आरंभ होती है तो सभी अधिकारी ध्यान से सुनते हैं। बाद में बूढ़े अधिकारी थक जाने पर सिगरेट व चाय पीने लगते हैं या टॉयलेट जाते हैं, इसलिए रिपोर्ट पर कोई ध्यान नहीं देता।''

उनकी बात सही थी, पर मैं उनके बारे में थोड़ा चिंतित था। अभी कारखाने में आए उन्हें एक महीना भी नहीं हुआ था। भला वह क्या रिपोर्ट पेश करेंगे?

कंपनी ने सभी निदेशकों को इस मीटिंग के लिए बुलाया था। सचिव ल्यू को आशंका थी कि निदेशक चिन को कारख़ाना आए अभी अधिक समय नहीं हुआ और वे सारी परिस्थिति से परिचित नहीं हैं। अपने सहज स्वभाव के अनुसार उन्होंने सलाह भी दी कि उपनिदेशक ल्वो को भेजा जाए। मुझे मालूम था कि ल्वो इस मीटिंग में जाने के लिए उत्सुक भी थे। पर निदेशक चिन ने हंसकर कहा, ''मेरे जाने से भी वही बात होगी।'' मुझे नहीं मालूम कि वह ल्वो मिङ को इस मौके से वंचित करना चाहते थे या अपने नए पद के कारण इस मौके को स्वयं खोना नहीं चाहते थे। अवश्य ही यह उनकी बड़ी सूक्ष्म चाल थी।

मीटिंग आरंभ होने पर बोलने वाले वह पहले व्यक्ति थे। उन्होंने रिपोर्ट अच्छी तरह पेश की। उन्होंने बताया कि कैसे फौङ वानछङ ने तीन दिनों की छुट्टी में से केवल डेढ़ दिनों की छुट्टी ली। उन्होंने मजदूरों की प्रशंसा की, अपने बारे में कुछ भी नहीं बताया। उन्होंने नेताओं को यह विश्वास दिला दिया कि वह बिल्कुल समर्थ हैं। बाद में कंपनी के अधिकारियों ने हमारे कारखाने की प्रशंसा की और यह हमारे कारखाने जैसी छोटी इकाई के लिए एक बड़ी बात थी!

मुझे पूरा विश्वास हो गया कि निदेशक चिन उतने साधारण नहीं हैं। दूसरी रिपोर्ट आने के साथ उन्होंने मुझसे धीरे से कहा, ''लाओ वेइ, मैं थोड़ी देर के लिए बाहर जा रहा हूं। आप अच्छी तरह से टिप्पणी लेंगे और दूसरे कारखाने के अनुभवों और कंपनी के अधिकारियों के सुझावों को ध्यान से सुनेंगे।'' इसके बाद वह लगभग मीटिंग समाप्त होने के समय लौटे। यह आश्चर्य की बात थी।

२५ अप्रैल, १९७९

एक के बाद दूसरी आश्चर्यजनक घटनाएं होती हैं; इन दिनों उपनिदेशक ल्वो के चेहरे के दाग नहीं दिख रहे हैं। अधिकार जमाने की प्रतिद्वंद्विता इतनी जल्दी कैसे समाप्त हो गई? ल्वो मिङ आसानी से हार मानने वाले व्यक्ति नहीं हैं। क्या उन्होंने निदेशक चिन से हार मान ली? पर यह संभव नहीं है।

आज दोपहर में जब मैं भोजनालय से कार्यालय लौटा तो निदेशक चिन मेरे कमरे में किसी से फोन पर बात कर रहे थे। उपनिदेशक चापलूसी की मुद्रा में खड़े थे। "... उसका नाम ल्वो चिङय्वी है। हां, ल्वो ...चिङ...य्वी। वह मेरी रिश्तेदार है। नहीं, आप यह कर सकते हैं या नहीं? यह काम हो जाना चाहिए। आप इस सप्ताह के अंत तक मुझे बता दें। ठीक है ...अच्छी बात है ... निश्चित है।"

सब कुछ स्पष्ट हो गया। निदेशक चिन हमेशा ऐसे ही दूसरों का दिल जीतें, इससे मैं सहमत नहीं हो सकता। पर मैं उनकी चालाकी की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। ल्वो मिङ जैसे सहायक के साथ काम करना आसान नहीं है, वह इस कारखाने के अंदर-बाहर से परिचित हैं और उनका समर्थन करने वाले लोग भी हैं। यदि निदेशक चिन ल्वो मिङ को संभाल लेते हैं तो उनकी स्थिति मजबूत हो जाएगी। मैंने नहीं सोचा था कि वह ऐसा कुछ भी कर सकते हैं। तभी तो कुछ मजदूर उनकी पीठ पीछे कहते हैं कि वह बड़े "धूर्त" हैं!

१० मई, १९७९

निदेशक चिन के साथ मैं ब्यूरो की मीटिंग में गया था। थोड़ी देर बैठने के बाद उन्होंने धीरे से कहा, "लाओ वेइ, टिप्पणी अच्छी तरह लें। मैं एक मिनट के लिए बाहर जा रहा हूं।" कंपनी की मीटिंग हो या ब्यूरो की, वह हमेशा ऐसे ही करते हैं। आखिर बाहर जाकर वह करते क्या हैं?

थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के बाद मैं भी बाहर निकला। मैंने सोचा कि जरा उन्हें देखूं। रासायनिक ब्यूरो भवन के अनेक कमरों के दरवाजे गर्मी पड़ने के कारण खुले हुए थे। निदेशक चिन हर मंजिल पर जाकर लोगों से मिल रहे थे। पहली से चौथी मंजिल तक वह हर कमरे में गए, हर जगह उनका व्यवहार ऐसा था जैसे पुराने दोस्त से मिल रहे हों। उन्होंने हर सेक्शन के प्रधान और कार्यकर्ता का अभिवादन किया और उनसे हंसकर बात की। वह हर जगह अपनी जेब में महंगी सिगरेट लेकर गए और बड़ी उदारता से पीने वालों को दीं। कभी-कभी दूसरों का कप उठाकर पुराने दोस्त की तरह उसी कप से चाय पी ली। केवल वही सिगरेट नहीं बांट रहे थे, दूसरे भी उन्हें सिगरेट पिला रहे थे। पर वह सभी सेक्शन के लोगों से अच्छी तरह परिचित जान पड़े। उन्होंने कभी उनसे गंभीर बातें कीं और कभी हंसी-मजाक किया। थोड़े ही समय में कई घंटे बीत गए।

हमारी छोटी इकाई रासायनिक ब्यूरो की नजर में शायद बहुत छोटी और महत्वहीन थी।

इस साधारण कारखाने का निदेशक ब्यूरो में हंसी-मजाक करते हुए घूम सकता है और अपने से बड़े कार्यकर्ताओं से भी बातें कर सकता है। यह उल्लेखनीय बात है। इस संदर्भ में मैंने उन्हें असाधारण समझा।

मीटिंग के बाद कारखाने लौटते समय मैंने निदेशक चिन से पूछा, "मैंने सुना है कि कंपनी और ब्यूरो में आपके अनेक दोस्त हैं। क्या यह सही है?"

उन्होंने मेरी तरफ देखकर हंसते हुए कहा, "क्या आपने आज सबों को नहीं देखा?"

मैं अपना असमंजस नहीं छिपा सका।

उन्होंने खुलकर कहा, "लाओ वेइ, थोड़े समय में मैं जितना जान पाया हूं, आप एक बड़े अच्छे क्लर्क हैं। जब आप लिखते हैं तो तेज और सुंदर लिखते हैं। दिनभर आप मेहनत से काम करते हैं, किसी भी निदेशक से कहीं ज्यादा व्यस्त रहते हैं। पर आप एक सीमा तक किताबी कीड़े हैं और चीजों को सीधे रूप में देखते हैं। मैंने तो यही सीखा है। पूंजीवादी समाज में पैसे से हर काम हो सकता है। अपने देश में सारा काम संपर्क से होता है। यह स्थिति अगले चार-पांच वर्षों में नहीं बदलने जा रही है। हमारा कारखाना छोटा है और वहां छोटे कार्यकर्ता हैं। हमारी प्रतिष्ठा और पहुंच नहीं है। यदि हम अपने संपर्कों का फायदा नहीं उठाएंगे, यदि डोर अपनी तरफ नहीं खींचेंगे तो हम कभी आगे नहीं बढ़ पाएंगे।"

भयंकर दृष्टिकोण! मैं नहीं बता सकता कि मैं उनसे घृणा करता हूं या उनका सम्मान करता हूं।

१२ मई, १९७९

उपनिदेशक के हंसते चेहरे से सारे दाग लगभग गायब हो गए। उन्होंने खुश होकर मुझे बताया, "लाओ वेइ, आप मेरी एक मदद कर दें। क्या आप आज रात निदेशक चिन को अपने साथ मेरे घर खाने पर ले आएंगे? मुझे डर है कि वह नहीं आएंगे, इसलिए आपसे कह रहा हूं।"

मैंने मन ही मन सोचा, "आप बड़े क्षुद्र आदमी हैं। बेटी की नौकरी के बदले आप उन्हें खाना खिलाना चाहते हैं।" फिर यह सोचकर कि ल्वो मिङ पहले एक अप्रशिक्षित पम्प मजदूर थे, बाद में संयोग से पार्टी में आ गए और धीरे-धीरे उन्नति कर उपनिदेशक बन गए। ऐसे आदमी से और उम्मीद भी क्या की जा सकती है? फिर भी मैं उनके घर खाने पर नहीं जाना चाहता था।

पहले जब भी ऐसा कोई अनचाहा निमंत्रण मिला, मैंने हमेशा पत्नी और बच्चे के बहाने उसे टाल दिया। कभी कहता कि पत्नी बीमार है तो कभी कहता कि बच्चे को बुखार है। किसी न किसी बहाने मैं पीछा छुड़ा लेता था। मैंने आज भी एक बहाना बनाया, "मेरे बच्चे को निमोनिया हो गया है। मुझे सीधे घर लौटकर उसे अस्पताल ले जाना है।"

ल्वो ने कठोर नजरों से देखते हुए कहा, "मैं जानता हूं, यह मेरी गुस्ताखी है कि एक साधारण उपनिदेशक होकर एक महत्वपूर्ण क्लर्क को अपने घर आने के लिए कह रहा हूं।

फिर आप ऐसा करें। आप निदेशक चिन के साथ पहले मेरे घर आएं और फिर आपकी जो मर्जी हो करें।''

कोई चारा न था! ल्वो चले गए और मैं स्वयं को गाली देने के सिवा कुछ न कर सका, ''यदि मेरे बेटे ने क्लर्क बनने का फैसला किया तो मैं उसकी उंगलियां काट दूंगा!''

काम खत्म होने के पहले उपनिदेशक ल्वो की तरफ से मैं निदेशक चिन को निमंत्रित करने गया। उन्होंने खुशी-खुशी निमंत्रण स्वीकार किया और मुझे भी अपने साथ चलने के लिए कहा। मैंने फिर से वही बहाना बनाया। निदेशक चिन की आंखें सिकुड़ कर छोटी हो गईं। उन्होंने हंसते हुए कहा, ''लाओ वेइ, आपको झूठ बोलना भी नहीं आता। अब से आप सच ही बोला करें। आपका चेहरा सच या झूठ बता देता है।''

मैंने झूठ बोला, ''निदेशक चिन, मैं सच कह रहा हूं।''

उन्होंने ठहाका लगाया, ''आप हमेशा एक ही बहाना बनाते हैं, उसे कभी नहीं बदलते। जरा दूसरों की बातें भी सुना करें। कारखाने के सारे लोग जानते हैं कि लाओ वेइ हमेशा एक ही बहाना बनाते हैं। कोई भी बात हो, यदि आप नहीं जाना चाहते तो आप कहते हैं कि पत्नी या बच्चा बीमार है। आपके जैसा तेज आदमी और भी कोई बहाना बना सकता है। आप हमेशा अपने घर के सदस्यों पर ऐसी विपत्ति क्यों लाते हैं?''

मैं झेंपते हुए हंसा और मैंने असहमति में अपना सिर हिलाया।

उन्होंने मेरा कंधा थपथपाया। ''इतने सिद्धांतवादी न बनें। उपनिदेशक के निमंत्रण को ठुकराकर आप कुछ हासिल नहीं कर लेंगे। हम उस शराब की एक बूंद तक नहीं छुएंगे, जिसकी कीमत दो य्वान के नीचे हो। हम दोनों साथ चलेंगे, ठीक है! उनके घर जाकर आपको कुछ नहीं बोलना है। केवल सिर झुकाकर खाना खा लेंगे आप। आप मुफ्त में मिले भोजन को नहीं ठुकरा सकते।''

आखिरकार मैं नहीं गया, पर मैं ल्वो मिङ के निमंत्रण का मतलब जानता हूं। उनकी बेटी ने आज ही से राज्य संचालित नंबर-१० रेडियो कारखाने में काम आरंभ किया है। निदेशक चिन निश्चित ही अपना काम बना सकते हैं, उन्होंने बड़ी आसानी से ल्वो मिङ जैसे आदमी को पालतू बना लिया।

जब पार्टी उत्साह, अनुशासन और कानून से काम नहीं बनता तो वह व्यक्तिगत उपकार और वफादारी करते हैं। मैं नहीं जानता क्यों, पर निदेशक चिन मेरे लिए आदरणीय नहीं हुए। पहली मुलाकात में बनी उनकी सादगी और सहृदयता की मेरी धारणा बाद की घटनाओं से धीरे-धीरे मिट गई।

(जून से सितम्बर १९७९ तक की डायरी काट दी गई है)

९ अक्तूबर, १९७९

वरिष्ठ अधिकारी अपने मातहतों के आदर्श होते हैं। यदि नेता और कार्यकर्ता का संबंध

जटिल हो तो समाज में भी उसी के अनुसार जटिलता पैदा होती है। और यह जटिलता लोगों की राजनीति और सोच में प्रकट होती है।

ल्वो मिङ और निदेशक चिन आजकल दोस्तों जैसा व्यवहार करते हैं, पर सचिव ल्यू और निदेशक चिन के संबंधों में तनाव आ गया है। पार्टी शाखा की मीटिंग में आज बोनस के सवाल पर सचिव और निदेशक का परस्पर विरोध सामने आ गया।

वरिष्ठ अधिकारियों ने सितम्बर में एक दस्तावेज भेजा था, उसके अनुसार कारखाने के मुनाफे से मजदूरों को बोनस देने की अनुमति दी गई थी। हमारा कारखाना उपलब्ध सामग्रियों का प्रयोग करता है और अधिकांश कच्ची सामग्री अन्य कारखानों की अवशिष्ट सामग्री होती है। हमारा खर्च कम है, पर हम अच्छा मुनाफा कमाते हैं। जितना छोटा कारखाना हो, उतने कम मजदूर होते हैं और उन्हें बोनस देना आसान होता है। सितम्बर महीने का हिसाब करने पर पाया गया कि हर मजदूर को ५० य्वान बोनस में दिये जा सकते हैं। कार्यालय में काम करने वालों तक को ४० य्वान से अधिक मिल सकते थे। अधिकांश मजदूरों के मासिक वेतन के बराबर यह रकम थी।

शानतुङ प्रांत के सीधे और ईमानदार सचिव ल्यू आंकड़े सुनकर दंग रह गए। हालांकि उनकी आर्थिक स्थिति कारखाने के कार्यकर्ताओं से भी नीची थी, पर उन्होंने आपत्ति प्रकट की। "यह स्वीकार्य नहीं है। बोनस के रूप में देने के लिए यह राशि बहुत अधिक है।"

लोगों के चेहरे से मैंने अनुमान लगाया कि वे सचिव ल्यू की राय से सहमत नहीं हैं। "यह अधिक क्यों है?" पैसे में कोई बुराई नहीं है। अधिक देना पाप नहीं है। ४०-५० य्वान अतिरिक्त पाकर कौन खुश नहीं होगा? पर पार्टी कमेटी के किसी भी सदस्य ने सहमति या असहमति में मुंह नहीं खोला। वे निदेशक और सचिव को देखते रहे और फैसले की प्रतीक्षा में बैठे रहे। अधिक पैसे पाकर निश्चित ही उन्हें खुशी होती, मगर उनमें से कोई यह कहना नहीं चाहता था।

निदेशक चिन ने ल्वो मिङ से पूछा, "लाओ ल्वो, आपकी क्या राय है?"

उपनिदेशक ल्वो ने स्पष्ट स्वर में कहा, "हमें निर्देश के अनुसार बोनस बांटना चाहिए।"

सचिव ल्यू ने कहा, "यह दस्तावेज सभी उद्यमों को ध्यान में रखकर बनाया गया था, हमारे कारखाने की विशेष स्थिति है। हमें दस्तावेज की अस्पष्टता का फायदा नहीं उठाना चाहिए। यदि अधिकारियों को पता चला कि हम इतनी बड़ी राशि बांटने जा रहे हैं तो समस्या पैदा हो सकती है।"

"यदि हम बोनस में ये पैसे नहीं बांटेंगे तो फिर इनका क्या करेंगे? क्या इन्हें अधिकारियों को दे दें?" ल्वो ने प्रतिकार किया।

सचिव ल्यू ने कहा, "हम इन्हें बैंक में रखेंगे। सबके हित में इन्हें भविष्य में खर्च करेंगे।"

निदेशक चिन खामोश बैठे सिगरेट पी रहे थे। उनकी राय का कोई भी अनुमान नहीं लगा सकता था। वह संपर्कों से काम करने वाले व्यक्ति थे और पक्ष-विपक्ष को आंकने में निपुण थे। वह मजदूरों को हर महीने कुछ य्वान देने का जोखिम नहीं उठा सकते थे। कंपनी और ब्यूरो के नेताओं और उनके संबंधों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा तो वह क्या करेंगे? क्या

राज्य के हित के खिलाफ नहीं होगा? क्या इससे राज्य और मजदूरों के संबंधों में कोई फर्क नहीं पड़ेगा? उन्हें क्या करना चाहिए? यह स्पष्ट था। वह इस छोटी समस्या के लिए कोई बड़ा दांव नहीं चलेंगे। खासकर जब पार्टी सचिव ने अपनी स्पष्ट राय रख दी है, वह इसका खुला विरोध नहीं करेंगे। सबके साथ मैंने भी यही अनुमान किया कि निदेशक चिन बोनस की स्वीकृति नहीं देंगे।

निदेशक चिन ने जब बोलना आरंभ किया तो उनकी पहली पंक्ति मेरी उम्मीद के अनुसार थी। उन्होंने कहा, "लाओ ल्यू ठीक कह रहे हैं। बोनस कुछ अधिक जरूर है..."

उपनिदेशक ल्वो का चेहरा लाल हो गया, "आप... क्या..."

निदेशक चिन ने उनकी तरफ मुड़कर हाथ से इशारा किया। निश्चित ही मीटिंग से पहले उन्होंने इस संबंध में बात की होगी। ल्वो मिङ को पहले ही सहमत कर लेने के बाद क्या वह वर्तमान स्थिति का फायदा उठाने के लिए अपनी राय बदल सकते थे? शायद उन्होंने सचिव ल्यू की राय जानने के लिए ल्वो मिङ का लिटमस पत्र की तरह प्रयोग किया था।

निदेशक चिन ने आगे कहा, "हम पूर्वी रासायनिक कारखाने के नेता हैं। हमें सबसे पहले अपने कारखाने की चिंता करनी चाहिए। हमें पूर्वी रासायनिक कारखाने के मजदूरों की चिंता करनी चाहिए। यदि हमने उन्हें नाराज किया तो बहुत बुरा होगा। अधिकारियों के निर्देश पहले ही मजदूरों को बता दिए गए हैं। यदि हमने निर्देशों के अनुसार बोनस नहीं दिया तो हम मजदूरों से किया वादा तोड़ेंगे। मजदूर हमें सिर्फ गालियां ही नहीं देंगे, अगर वे असंतुष्ट हो गए तो इसका बुरा असर उत्पादन पर भी पड़ेगा। इसलिए मैं पूरा बोनस ५० य्वान देने की सिफारिश करता हूं। यदि कंपनी ने कोई आपत्ति की तो हम बताएंगे कि हमने अधिकारियों के निर्देश के अनुसार कार्य किया है। यदि दूसरे कारखानों ने कुछ पूछा तो हम उचित जवाब दे सकते हैं, 'हमने कड़ी मेहनत की है, इसलिए उसका लाभ तो मिलेगा ही। हमने राज्य को अधिक मुनाफा दिया है, इसलिए स्वाभाविक तौर पर हमारा बोनस अधिक होगा ही।' आप लोगों की क्या राय है?"

कमेटी के अधिकांश सदस्यों ने निदेशक चिन से सहमति प्रकट की और यह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। सचिव ल्यू की अभी भी यही राय थी कि बोनस की इतनी बड़ी राशि उचित नहीं है, पर अपनी आपत्ति के लिए वह कोई तर्क न दे सके। हालांकि निदेशक चिन का प्रस्ताव बहुमत से स्वीकृत हो गया था, पर मीटिंग समाप्त होने पर सचिव ल्यू ने निदेशक चिन से रुकने के लिए कहा।

काम समाप्त होने के बाद कंपनी के लिए कुछ आंकड़े लिखने थे, इसलिए मैं भी रुका हुआ था। सचिव ल्यू के कमरे का रोशनदान थोड़ा खुला हुआ था; उनके कमरे में चल रही बातचीत की आवाज मुझ तक आ रही थी। मैं सचिव ल्यू के स्वभाव के कारण चिंतित था; वह बड़े ईमानदार व्यक्ति हैं, उनमें कोई दोष नहीं ढूंढ़ा जा सकता। पहले निदेशक व उपनिदेशक के बीच तनाव आता था तो वे इसकी चिंता दिनभर करते रहते थे। भूतपूर्व निदेशक वाङ उनके स्वभाव के अनुकूल थे, इसलिए दोनों में खूब छनती थी। भूतपूर्व निदेशक वाङ भी अपने अधिकारियों और मातहतों दोनों के प्रति सिद्धान्तवादी और ईमानदार थे। उन्होंने कभी

किसी को धोखा देने की कोशिश नहीं की, पर वह थोड़े संकीर्ण विचारों के थे और बहुत जल्दी नाराज हो जाते थे। साल पूरा होने के पहले ही उन्हें ल्वो मिङ के कारण जाना पड़ा।

अब योग्य और चालाक निदेशक चिन आए हैं। उन्होंने अधिकारियों और मातहतों से अत्यंत घनिष्ठ संबंध कायम कर रखा है। यहां तक कि ल्वो मिङ को भी अपने पक्ष में कर लिया। निदेशक और उपनिदेशक दोनों मिलकर अच्छा काम कर रहे हैं। सचिव ल्यू को भी चिंता नहीं करनी चाहिए। वह सचमुच इस बात को बहुत अधिक महत्व दे रहे हैं। भूतपूर्व निदेशक वाङ और वह दोनों मिलकर ल्वो मिङ का मुकाबला नहीं कर सके। इस बार कैसे वह अकेले निदेशक चिन और ल्वो मिङ से निबट सकेंगे? एक ईमानदार आदमी चालबाज से लड़ाई नहीं जीत सकता। मैं उनके लिए और कारखाने के भविष्य के प्रति चिंतित हूं।

बगल के कमरे में सचिव ल्यू की आवाज ऊंची होती जा रही थी, "किसी नेता की सबसे बड़ी शर्त समस्याओं के प्रति सही विचार का होना है। आपको किसी समूह की सनक का शिकार नहीं होना चाहिए। आपको सभी पक्षों पर विचार करना चाहिए। लोगों को खुश करने के लिए राज्य की संपत्ति हथियाना तो और भी अनुचित है! निदेशक चिन, हमारे पास ऐसी शिकायत लेकर अनेक व्यक्ति आए हैं। आपको और अधिक कर्तव्यनिष्ठ होना चाहिए।"

किसी वरिष्ठ अधिकारी के लिए यह बड़ा आरोप था। मैंने तुरंत आंकड़े एकत्र किए और बगल के कमरे के तनाव को कम करने के लिए वहां पहुंचा।

निदेशक चिन आराम से बैठे हुए थे। सारी बातें सुनने के बाद भी उनके चेहरे पर परेशानी नहीं थी। उन्होंने मुझे देखकर हंसते हुए कहा, "लाओ वेइ, आप अच्छे समय पर आए। आप भी यहां बैठें। अपने सचिव ल्यू ने मुश्किल कर दी है। आश्चर्य नहीं कि हमारे भूतपूर्व सहकर्मी उनके साथ कारखाने में काम न कर सके। हमारे सचिव की रुचि मजदूरों की मदद करने से अधिक इसमें है कि वे अपनी मुश्किलों का रोना रोते रहें। आप ही बताएं, कोई ऐसा सबूत है, जिससे यह सिद्ध होता हो कि मैं अपना काम उचित तरीके से नहीं कर रहा हूं? क्या आप कह सकते हैं कि मैं मजदूरों के हक के लिए राज्य की संपत्ति हथिया रहा हूं? क्या मैं वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशों के अनुसार काम नहीं कर रहा हूं?"

सचिव ल्यू ने हाथ हिलाकर कहा, "जब पैसे की बात आती है तो आप जितना अधिक बाटेंगे, उतनी कम शिकायत आएगी। यदि उसमें थोड़ी कटौती कर दें तो सारे मजदूर बड़बड़ाने लगेंगे। नेता होने के कारण हमें उनके दूरगामी कल्याण की बात सोचनी चाहिए। हमें मजदूरों को सिखाना है, उन्हें राह दिखानी है। क्या दस्तावेज में यह नहीं लिखा है कि हमें मुनाफे का कुछ हिस्सा सामूहिक हित में खर्च करना चाहिए?"

"यदि आप उन्हें पूरे ५० य्वान नहीं देंगे तो वे हमें गालियां देंगे। और फिर यदि आप कुछ काट भी लेते हैं तो आप उस राशि का क्या उपयोग करेंगे?"

"संकट की घड़ी के लिए रखेंगे। हां, यदि अगले महीने कोई बात हुई या कोई नियत कार्य पूरा नहीं हुआ तो हम बोनस दे सकते हैं। यदि हमने बैंक में पर्याप्त पैसे जमा करवा लिए तो हम मजदूरों के लिए आवास की व्यवस्था कर सकते हैं।"

"भूल भी जाएं, सचिव ल्यू! आपको मालूम नहीं कि आप क्या मुसीबत मोल ले रहे हैं।"

निदेशक,चिन ने मुड़कर मुझसे कहा, "आप क्लर्क हैं और आपके सामने यह स्पष्ट होना चाहिए। यदि आप समय पर अधिकार का प्रयोग नहीं करते तो वह बेकार हो जाएगा। यदि आपने बोनस देने की बात कही है तो आपको देना चाहिए। यदि आपने अभी बोनस नहीं दिया तो हवा बदल जाएगी और निर्देश पलट जाएगा। आप अभी भी मकान बनवाना चाहते हैं? हमारे जैसे छोटे कारखाने के लिए बीस-तीस फ्लैट बनाना मुश्किल होगा। स्थानीय निर्माण ब्यूरो, बिजली सप्लाई विभाग, जल सप्लाई विभाग और फिर कोयला भंडार तथा किराने की दुकान वाले भी कुछ मांगेंगे। हमारे लिए कितने फ्लैट बच जाएंगे? हम सारे पैसे अभी कर्च कर देंगे! हम अपना समय बर्बाद नहीं करेंगे! क्या गालियां सुनना अच्छी बात है? हमारे मजदूरों को इसमें से कुछ नहीं मिलने जा रहा है। यदि हम पैसे लेकर उन्हें दे देंगे तो वह सुरक्षित रहेगा और लाभदायक भी होगा।"

सचिव ल्यू ने सहमति या असहमति नहीं व्यक्त की।

निदेशक चिन ने सिगरेट का पैकेट निकाला और हमारी तरफ सिगरेट बढ़ाई। सचिव ल्यू ने मना कर दिया और अपनी जेब से सिगरेट निकालकर जलाई। निदेशक चिन ने इस पर ध्यान नहीं दिया और सचिव की तरफ बढ़ाई सिगरेट अपने मुंह से लगा ली। सिगरेट जलाकर लंबा कश लेने के बाद उन्होंने कहा, "आपकी सलाह १९५८ के पहले कारगर हो सकती थी, अब नहीं हो सकती। हमारे सामने चुनौतियां हैं, हम वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश को नजरअंदाज नहीं कर सकते और न ही उसका पूरी तरह पालन कर सकते हैं। सचिव ल्यू आपने स्वयं ऐसी स्थिति में कितनी मुसीबतें खड़ी कीं? 'सांस्कृतिक क्रांति' के दौरान गलती से जिन लोगों को जबरन बाहर भिजवाया गया था, बाद में सरकारी अनुमति मिलने पर कोई शहर आया तो आपने तुरंत उसके लिए नौकरी की व्यवस्था नहीं की, आपने की? इस पर आपको कितनी गालियां सुननी पड़ीं? एक बात और बता दूं। यह अवरुद्ध किए गए मुआवजे के बारे में है। जिसने इस सिलसिले में दबाव डाला, उसे जल्दी पैसे मिल गए। जो धीरे-धीरे काम करता रहा, उसे पैसे नहीं मिले। इस तरह की बात हमेशा होती है। जो चौकन्ना नहीं रहता, उसे परेशानी झेलनी पड़ती है।"

निदेशक चिन ने ईमानदारी से अपनी बात कही। वह सचमुच सचिव ल्यू को थोड़ा लचीला बनाना चाहते थे। मगर मैंने महसूस किया कि सचिव ल्यू पर इसका कोई असर नहीं पड़ा, उल्टा वह बड़े विरोधी हो गए।

१० अक्तूबर, १९७९

बोनस दिए जाने की घोषणा के बाद पूरे कारखाने में केवल बोनस की ही चर्चा थी। यह स्वाभाविक भी है। मुझे गुस्सा इस बात पर आ रहा है कि जितनी बातें मुझे मालूम हैं या जितनी बातें दर्ज की गईं, उनसे कहीं अधिक कारखाने के मजदूरों को मालूम हैं कि कल पार्टी शाखा की मीटिंग में इस बारे में क्या बहस हुई। सचिव ल्यू को सभी गालियां दे रहे हैं और निदेशक चिन की हर तरफ प्रशंसा हो रही है।

सचिव ल्यू के प्रति किए गए अन्याय से मुझे धक्का लगा है।

इस मौके का फायदा उठाने के लिए निदेशक चिन ने मजदूरों और कर्मचारियों की एक सभा बुलाई ताकि सभी उनका समर्थन करें। मुझसे उन्होंने कुछ भी लिखने के लिए नहीं कहा और सभा में छोटा मगर उत्तेजक भाषण देकर अपनी दक्षता दिखाई।

उन्होंने कहा, "...इस महीने के बोनस में से एक पैसा भी नहीं काटा गया है। हमने सब दे दिया है। इस महीने का बोनस पाकर कुछ लोगों को आश्चर्य होगा। हम सिर्फ इतना ही कहेंगे कि आप मेहनत से काम करें। यदि हमारे कारखाने का मुनाफा और अधिक हुआ तो अगले महीने बोनस की रकम भी अधिक बड़ी होगी। आप निश्चिंत रहें, जब तक मैं यहां हूं, आपके बोनस में से एक पैसा भी नहीं काटा जाएगा और उसे देने में कोई देरी भी नहीं की जाएगी।..."

२ नवंबर, १९७९

यह रविवार बेकार चला गया। सुबह चार बजे से दोपहर के तीन बजे तक मैं तीन-चार छोटी मछलियां ही पकड़ पाया। घर लौटते समय निदेशक चिन से मुलाकात हो गई। उन्होंने टोकरीभर मछलियां पकड़ी थीं। मैंने उनसे पूछा भी कि उन्होंने कहां से पकड़ीं। वह हंसकर टाल गए। मैंने अनुमान लगाया कि उनकी किसी मछली तालाब के चौकीदार से जान-पहचान होगी, वहीं उन्होंने इतनी मछलियां पकड़ी होंगी। मेरे मना करने के बावजूद उन्होंने आधी मुझे दे दीं। उनके दरवाजे से गुजरते समय उन्होंने मुझे अपने घर में चलने का निमंत्रण दिया। मैं उनकी बात नहीं टाल सकता था और दूसरे मेरी इच्छा भी थी कि उनका घर देखूं। मैंने उम्मीद की कि उनके जैसी पहुंच वाले आदमी का घर अवश्य ही भव्य होगा।

अंदर घुसने के साथ ही मुझे लगा कि उनका घर एकदम साधारण है। वह इतना साधारण था कि मुझे विश्वास ही नहीं हुआ, कहीं निदेशक का घर ऐसा हो सकता है क्या?

उनकी बेटी कमरे में बैठी होमवर्क कर रही थी। उन्होंने उससे कुछ खाना बनाने और शराब लाने के लिए कहा। उसने उन्हें घूरकर देखा और अपनी किताबें समेटकर अपनी दादी के कमरे में चली गई।

निदेशक चिन ने अपनी मां से खाने-पीने की व्यवस्था करने के लिए कहा। उनकी मां ने ना तो नहीं की, पर वे बड़बड़ाती रहीं और थोड़ी देर के अंदर ही सारी समस्याएं बता गईं।

हर महीने सत्तर य्वान से अधिक कमाने वाले निदेशक चिन अपने वेतन का एक छोटा हिस्सा ही परिवार को देते हैं। बाकी से वह अच्छी सिगरेटें और शराब खरीदते हैं। हर रात पड़ोस के रेस्तरां से शराब पीकर घर लौटने के बाद थोड़ा खाकर सो जाते हैं। उनकी मां और दो छोटे बच्चों को उनकी पत्नी के वेतन के सहारे रहना पड़ता है। घर में उनकी प्रतिष्ठा कारखाने की प्रतिष्ठा की अपेक्षा बहुत नीची है।

पहले मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह ऐसे व्यक्ति हो सकते हैं। विडंबना यह कि इसके बावजूद उनके प्रति मेरी धारणा अच्छी बनी। उनके परिवार के प्रति पूरी सहानुभूति रखता हुआ मैं इस बात की सराहना करता हूं कि उन्होंने अपनी पहुंच का फायदा

कारखाने को दिलवाया है, अपने परिवार के हित में उसका प्रयोग नहीं किया है।

३१ दिसंबर, १९७९

पाली खत्म होने की घंटी बजने के बावजूद किसी भी कार्यकर्ता ने काम बंद नहीं किया, क्योंकि बैंक से निदेशक चिन का फोन आया था। कार्यालय आने के तुरंत बाद वह वित्त विभाग के कर्मचारी के साथ सुबह बैंक गए थे। कारखाने ने मजदूरों को १०० य्वान सालाना बोनस देना तय किया था, पर बैंक उसकी मंजूरी नहीं दे रहा था। निदेशक सारे दस्तावेज लेकर स्वयं बातचीत करने गए थे। वह सुबह वहीं रहे और दोपहर में खाने के लिए भी नहीं आए। मुझे नहीं मालूम था कि उन्होंने कार्यकर्ताओं को क्यों रोका था।

थोड़ी देर के बाद निदेशक वापस लौटे। उनका चेहरा खुशी से चमक रहा था। उन्होंने कहा, "सबको काम करना है। हम इस रुपए को आज ही बांटेंगे।"

सारे कार्यकर्ता खुश थे। वित्त विभाग के कर्मचारी के निर्देश में उन्होंने सौ-सौ की गड्डियां बनायीं और उसे लाल लिफाफे में डाला।

सचिव ल्यू निदेशक चिन को मेरे कमरे में लाए। उन्होंने चिंता व्यक्त की, "निदेशक चिन, हम ऐसा नहीं कर सकते। मनचाहे ढंग से बोनस बांटना गलत है! दस्तावेज यह नहीं कहता कि आप साल के अंत में इतने अधिक पैसे बांट सकते हैं।"

निदेशक चिन हड़बड़ी में थे, उन्होंने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया, "दस्तावेज यह भी नहीं कहता कि मैं नहीं बांट सकता।"

"निदेशक चिन, यह आप गलती कर रहे हैं! क्या कारखाना नए साल से बंद होने जा रहा है?"

"रहने भी दें। आप असहनीय हैं!" निदेशक चिन ने अपना गुस्सा दबाने की कोशिश की। "मैंने कितनी बार आपसे कहा है, हमें जो मिला है, वह बांट देना है। और वह आज ही बांटना है। अन्यथा, मैं बैंक में अपना समय क्यों बर्बाद करता। निर्देश लगातार बदलते रहते हैं। समझे? कौन जानता है कि अगले साल क्या निर्देश आएगा? यदि बोनस रोकने का नया दस्तावेज आ गया तो हम चाहकर भी बोनस नहीं दे सकेंगे। फिर हमें सारे मजदूरों की गालियां सुननी पड़ेंगी।"

"अगर आपको उनकी गालियों का डर है तो मुझे गालियां सुनने दें।"

"पार्टी शाखा की मीटिंग में यह फैसला लिया गया है। आप स्वयं इसे नहीं बदल सकते। बोनस आज दिया जाएगा।" निदेशक चिन झटकते हुए दरवाजे से निकले। मैंने पहली बार उन्हें गुस्सा करते देखा था।

३ जनवरी, १९८०

आज कार्यालय में आने के साथ मुझे अेनक दस्तावेज मिले। उनमें से एक दस्तावेज १९७९ का बोनस रोकने से संबंधित था।

मैं दस्तावेज लेकर निदेशक चिन के पास गया। उन्होंने हंसते हुए कहा, "मैंने तो पहले ही कहा था।"

इसकी घोषणा के बाद पूरे कारखाने में हर जगह निदेशक की प्रशंसा के पुल बांधे जाने लगे। कार्यकर्ताओं ने भी इस संबंध में विचार-विमर्श किया। सभी यही कह रहे थे, "१०० यूवान ठीक समय पर मिल गये। एक दिन भी देर हो जाती तो हम इन्हें खो देते। निदेशक चिन दूरदर्शी और साहसी हैं।"

दोपहर में जन-प्रतिनिधि का चुनाव हुआ। कारखाने के मजदूरों और कर्मचारियों की संख्या के अनुसार नगर-क्षेत्र से हमें एक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिला था। इस बार का चुनाव लोकतांत्रिक था, वरिष्ठ नेताओं ने उम्मीदवारों को नहीं चुना था, सब कुछ जनता पर छोड़ दिया गया था।

कारखाने में चार मतदान केंद्र बनाए गए। वर्कशॉपों में तीन मतदान केंद्र थे और सभी विभागों के कार्यकर्ताओं के लिए एक अलग मतदान केंद्र था। निदेशक चिन को मजदूरों के मतदान केंद्रों में भारी बहुमत मिला। कार्यकर्ताओं के मतदान केंद्र में उन्हें केवल तीन मत नहीं मिले। ऐसे नतीजे की ही सबने उम्मीद की थी। एक अजीब बात हुई, मजदूरों के मतदान केंद्र के एक मतपत्र पर किसी मजदूर ने लिखा था, "निदेशक चिन चालाक लोमड़ी है।" मतपत्र गिननेवालों में से कुछ मजदूरों ने यह बात दूसरों से कह दी और निदेशक चिन पर लगाया यह लांछन हर तरफ फैल गया।

काम खत्म होने पर निदेशक चिन मेरे कमरे में आए। उनके हाथ में महंगी शराब की एक बोतल थी। "अभी गए नहीं, लाओ वेइ। आइए अपने गृहविहीन बेचारे निदेशक के साथ शराब पीजिए।" उन्होंने थैले से मूंगफली के दो पैकेट निकाले।

मैंने पूछा, "आप घर क्यों नहीं जा सकते?"

"कल शाम मेरा पत्नी से झगड़ा हो गया। अभी घर नहीं लौटना ही अच्छा होगा, वर्ना हम फिर से झगड़ने लगेंगे।" उन्होंने चाय की प्याली में शराब भरी और सिर उठाकर शराब मुंह में डाली।

मैंने कहा, "आप जिस तरह अपने परिवार की उपेक्षा करते हैं, यह कोई अच्छी बात नहीं है। अगले महीने से मैं आपके वेतन का अधिकांश हिस्सा आपके परिवार को दे आया करूंगा।"

वह हंसे, "रहने भी दें, शराब पिएं! एक ईमानदार अधिकारी को भी परिवार का झगड़ा सुलझाने में मुश्किल होती है। मेरी पत्नी मेरे साथ बीस वर्षों से लड़ रही है, पर मेरा स्वभाव नहीं बदला। आप कैसे सोच रहे हैं कि आप सहायता कर सकते हैं? छोड़ें, शराब पिएं।"

बिना कुछ खाए उन्होंने सारी शराब खत्म कर दी। दो पैग पीने के बाद वह एक मूंगफली खाते थे। जितना अधिक पीते थे, शराब पीने की इच्छा उतनी ही बढ़ती जाती थी। थोड़ी ही देर में उनकी उभरी आंखें लाल हो गईं। अचानक उन्होंने मेरी आंखों में देखते हुए कहा, "लाओ वेइ, आजकल लोगों को खुश करना अत्यंत कठिन काम है। चाहे कुछ भी करो, आप उन्हें खुश नहीं कर सकते।"

मैं उनका आशय समझ रहा था, पर क्या जवाब दूं, यह नहीं समझ पा रहा था।

उन्होंने फिर से शराब पी और कहा, "मजदूरों को खुश करने के लिए मैंने अधिकारियों को नाराज कर दिया; दूसरी तरफ यदि अधिकारियों को खुश करूं तो मजदूर

नाखुश हो जाएंगे। आपको मालूम है, किन तीन कार्यकर्ताओं ने मुझे मत नहीं दिया?"

मुझे आश्चर्य हुआ। उन्हें कैसे मालूम हो सकता है कि किसने उन्हें मत नहीं दिया? निश्चित ही उनका संदेह ल्यू पर होगा। यह स्वाभाविक भी था, कोई भी गंभीर और मर्यादित सचिव उन्हें मत नहीं दे सकता था। मैं इतना ही कह सका, "मुझे नहीं मालूम।"

निदेशक चिन ने कड़वी मुस्कान के साथ कहा, "एक मत तो ल्वो मिङ का था, इसमें कोई संदेह नहीं।"

मैंने ल्वो मिङ के बारे में नहीं सोचा था और मुझे पूरा-सा विश्वास भी नहीं हुआ। "मेरा ख्याल है, वह आपके बड़े प्रशंसक हैं।"

"हां, इसलिए कि मैंने उनकी मदद की है, उनकी मेरी जैसी पहुंच नहीं है। पर वह बड़े ही दुर्भावपूर्ण व्यक्ति हैं। वह ईर्ष्यालु भी हैं। उन्होंने मुझे मत नहीं देकर सही काम ही किया है।"

"तीसरा कौन हो सकता है?" मैंने पूछा।

अपनी नाक के ऊपर उंगली रखकर उन्होंने कहा, "मैं!"

मैंने सोचा, उन्होंने या तो अधिक शराब पी ली है या फिर मुझसे मजाक कर रहे हैं।

उन्होंने फिर से शराब पी और नशे की हालत में बहकते हुए बोले, "मैं सच कह रहा हूं। मुझे मालूम है, तुम भी मुझे नीची नजरों से देखते हो। तुम मुझे धूर्त समझते हो। है न? पर तुम्हें मालूम नहीं, पहले मैं ऐसा नहीं था। समाज में जितना अधिक लोगों से मिलता हूं, मेरी खाल पर उतनी ही मोटी ग्रीज की परत चढ़ती जाती है। लोच मछली भी धूर्त होती है, वह कीचड़ में छिपकर लोगों के हाथ से बच जाती है। जब इंसान को चारों तरफ से ठोकरें लगती हैं, वह धूर्त हो जाता है। समाज जितना जटिल होता है, मनुष्य उतना ही धूर्त होता है। यह सीधी सी बात है। सचिव ल्यू अच्छे आदमी हैं, पर उन्हें मेरे बराबर मत नहीं मिले। अब आप ही बताएं कि अच्छे आदमी होने का क्या फायदा है? यदि मैं उनके अनुसार नियमों का ख्याल कर कारखाना चलाऊं तो सारी व्यवस्था खराब हो जाएगी। मजदूर संतुष्ट नहीं होंगे। कारखाना सरकार को मुनाफा अदा नहीं कर सकता तो अधिकारी भी नाखुश होंगे। अधिक मत पाने से मैं खुश हूं, ऐसा न समझें। इसके विपरीत मैं बहुत ही उदास हूं। मुझे मालूम है कि सचिव ल्यू ने मुझे अपना मत नहीं दिया, पर मैंने उन्हें अपना मत दिया।"

"निदेशक चिन, आपने बहुत शराब पी ली है।" मैंने उनकी मदद की और उन्हें रात की ड्यूटी वाले व्यक्ति के बिस्तरे पर सुलाया। "आप थोड़ी देर यहां लेटे रहें। मैं घर से आपके लिए कुछ खाने को ले आता हूं।"

दोपहर में उन्हें मत देने का मुझे अफसोस हुआ। हालांकि उन्हें भारी बहुमत मिला था, पर वह कभी भी जनता के सही "जन-प्रतिनिधि" नहीं हो सकते।

मुझे पूरा विश्वास है कि वह अगली बार चुनाव हार जाएंगे।